।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2082 माघ कृष्ण त्रयोदशी, 16-31 जनवरी 2026 (16-31 January. 2026), • वर्ष 5 (Year-5), • अंक 18 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

गंगासागर में लाखों तीर्थयात्रियों ने लगाई आस्था की डुबकी

सोनी कुमारी झा,गंगासागर : हिंदुओं के आस्था का महापर्व मकर संक्रांति पर गंगासागर व जन-मानस का अद्भुत मिलन देखने को मिला। मोक्ष प्राप्ति की कामना लिए लाखों श्रद्धालुओं ने पतित पावनी गंगा व सागर के मिलन स्थल पर आस्था की डुबकी लगाई। गंगासागर मेले के आयोजन का मुख्य दायित्व प्राप्त बंगाल के बिजली मंत्री अरूप बिश्वास ने मकर संक्रांति का पुण्य काल समाप्त होने के बाद संवाददाता सम्मेलन में गत एक जनवरी से अब तक रिकार्ड 1.30 करोड़ लोगों के गंगासागर में पुण्य स्नान करने का दावा किया। उन्होंने कहा कि बुधवार को करीब 25 लाख और गुरु वार को एक दिन में लगभग 45 लाख लोगों ने पुण्य स्नान किया।अगर ऐसा है तो गंगासागर में भीड़ का इस बार सर्वकालिक रिकार्ड बन गया है। पिछला रिकार्ड 1.10 करोड़ का था, जो मंत्री के मुताबिक पिछले साल ही बना था। मंत्री का कहना है कि भीड़ का जो आंकड़ा पेश किया जा रहा है, वह टिकटों की बिक्री के आधार पर है। चूंकि गंगासागर चारों ओर से पानी से घिरा द्वीप है, इसलिए यहां भीड़ के आकलन का अंतिम व प्रामाणिक आधार बार्ज, वेसेल व लकड़ी के लांच के टिकटों की बिक्री को ही माना जा सकता है। कारण, तीर्थयात्री देश-दुनिया के किसी भी कोने से क्यों न आएं, गंगासागर पहुंचने के लिए उन्हें विशाल मुड़ी गंगा नदी पार करनी ही पड़ेगी। अधिकांश तीर्थयात्री लाट नंबर-8 से नदी पार करके गंगासागर के कचुबेरिया पहुंचते हैं. जिसमें 40-45 मिन्ट का समय लग जाता है। मंत्री के अनुसार बुधवार तक 85 लाख लोगों ने पुण्य स्नान किया था, उस हिसाब से गुरुवार को 45 लाख लोगों ने स्नान किया है। मालूम हो कि

बंगाल सरकार ने पिछले साल 1.10 करोड़ लोगों के गंगासागर में पुण्य स्नान करने का दावा किया था। अभी भी हजारो की संख्या में तीर्थयात्री पुण्य स्नान के लिए गंगासागर पहुंच रहे हैं।

सूर्योदय के साथ शुरू हो गया था पुण्य स्नान- पुण्य काल आरंभ होने का समय बुधवार दोपहर 1.19 बजे से था लेकिन सूर्योदय के साथ ही तीर्थयात्री स्नान करने लग गए थे। भीड़ के कारण सागर तट पर आने में परेशानी न हो, इस कारण हजारों लोग ने रात सागर तट के पास खुले आसमान के नीचे ठंड में काटी। जैसे-जैसे सूरज चढ़ता गया, सागर तट पर भीड़ बढ़ती चली गई। लोगों ने सागर तट पर गंगा मैया की पूजा-अर्चना की। भजन- कीर्तन हुआ। पुण्य स्नान के बाद बहुतों ने गोदान किया। बिहार, झारखंड, ओड़िशा, उत्तर प्रदेश से सैकड़ों पंडित गोदान करने गंगासागर पहुंचे थे। पुण्य स्नान व गोदान के बाद सब कपिल मुनि मंदिर की तरफ बढ़ चले। कपिल मुनि की जय जयकार से वातावरण गुंजायमान हो गई थी। सागर तट से कपिल मुनि मंदिर तक के रास्ते पर जगह-जगह बैरिकेडिंग करके भीड़ को नियंत्रित किया जा रहा था। मंदिर के पास एक समय भीड़ इतनी बढ़ गई थी इसे देखते हुए लोगों को कुछ समय के लिए सागर तट के पास रोक दिया गया था। मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की गई। आम लोगों के साथ खास ने भी इस दिन स्नान किया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास व धनबाद के सांसद ढुलु महतो भी पुण्य स्नान करने पहुंचे थे। उन्होंने गंगासागर मेले के लिए ममता सरकार की ओर से की गई व्यवस्था की प्रशंसा की। वहीं पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद जी महाराज अपने 500 अनुयायियों के साथ गुरु वार सुबह नौ बजे शाही स्नान किए।

মাননীয়া মুখ্যমন্ত্রী
মমতা বন্দ্যোপাধ্যায় কর্তৃক
মহাকাল মহাতীর্থের
শুভ শিলান্যাস
শিলিগুড়ি | ১৬ জানুয়ারি, ২০২৬ | বিকেল ৪টে

॥ মহাকাল ॥
মহাতীর্থ

• সাংস্কৃতিক ও আধ্যাত্মিক এই পর্যটনকেন্দ্র মোট ১৭.৪ একর জমির উপর তৈরি হবে • প্রতিদিন ১ লক্ষ তীর্থযাত্রী আসতে পারবেন • প্রধান শিবালয় ছাড়াও ১০৮ ফুট উঁচু শাশ্বত মহাকাল মূর্তি থাকবে • শিবালয়ের দক্ষিণ-পশ্চিমে গণেশ, উত্তর-পশ্চিমে কার্তিক, উত্তর-পূর্বে শক্তি এবং দক্ষিণ-পূর্বে বিষ্ণু/নারায়ণ— মহাকালের সঙ্গে এই চারজন দেবতাও পূজিত হবেন

পশ্চিমবঙ্গ সরকার

Memo No. 39(8) Local Advt./DICO/HWH Date - 15/01/2026

राज्य में अब सभी आपातकालीन सेवाएं नए एकल हेल्पलाइन नंबर 112 के माध्यम से होंगी उपलब्ध

राज्य ब्यूरो, कोलकाता :

केंद्र और राज्य सरकार की संयुक्त पहल के तहत बंगाल में जल्द ही एक आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर, 112, शुरू किया जाएगा। राज्य सचिवालय नवान्न के एक सूत्र ने बताया कि इस नंबर पर काल करने से पुलिस, अग्निशमन, स्वास्थ्य, एम्बुलेंस और आपदा प्रबंधन सहित सभी प्रकार की आपातकालीन सेवाएं एक ही मंच पर उपलब्ध होंगी। इसके परिणामस्वरूप, किसी भी दुर्घटना, आग, बीमारी या प्राकृतिक आपदा की स्थिति में बचाव अभियान तेजी से और व्यवस्थित तरीके से चलाया जा सकेगा। वर्तमान में प्रत्येक राज्य में पुलिस, अग्निशमन, स्वास्थ्य या अन्य आपातकालीन विभागों के लिए अलग-अलग हेल्पलाइन नंबर हैं। लेकिन किसी घटना की स्थिति में, आम लोगों में अक्सर यह भ्रम रहता है कि कौन सा नंबर डायल करें। कई मामलों में, आम लोग अग्निशमन या चिकित्सा सेवाओं के लिए 100 पर काल करते हैं। काल पहले पुलिस तक पहुंचती है, और फिर वहां से उन्हें संबंधित विभाग से संपर्क करना पड़ता है, जिससे आपातकालीन समय बर्बाद होता है। इस व्यावहारिक अनुभव के आधार पर, केंद्र सरकार ने एक वैकल्पिक और एकीकृत हेल्पलाइन शुरू करने का निर्णय लिया। केंद्र की योजना एक ऐसा नंबर शुरू करने की थी, जिसे महिलाएं और बच्चे आसानी से याद रख सकें और खतरे के समय सभी प्रकार की सहायता एक ही नंबर पर प्राप्त की जा सके। इसी विचार के साथ, डायल 112 शुरू करने की पहल की गई और केंद्र से प्रत्येक राज्य को इस सेवा को शुरू करने के निर्देश भेजे गए।

बुनियादी ढांचे की कमी के कारण राज्य में नहीं शुरू हो पाई थी सेवा- हालांकि यह प्रणाली देश के कई राज्यों में पहले से ही लागू है, लेकिन बुनियादी ढांचे की कमी और धन आवंटन के अभाव के कारण इसे बंगाल में अब तक शुरू करना संभव नहीं हो पाया है। नवान्न सूत्रों के अनुसार, इस बार राज्य ने निर्भया कोष के तहत इस परियोजना को शुरू करने की पहल की है। इसके अंतर्गत एक आधुनिक नियंत्रण कक्ष स्थापित किया जाएगा, जहां राज्य के विभिन्न हिस्सों से 112 पर आने वाली सभी कालें प्राप्त की जाएंगी। इस नियंत्रण कक्ष से संबंधित पुलिस स्टेशन, अग्निशमन केंद्र या नजदीकी अस्पताल को सहायता संदेश भेजा जाएगा।

पूरी प्रणाली जीपीएस आधारित प्रणाली के माध्यम से संचालित होगी : पूरी प्रणाली जीपीएस आधारित आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली के माध्यम से संचालित होगी। काल आते ही, कालर का स्थान, पंजीकृत मोबाइल नंबर और प्राथमिक पता सहित आवश्यक जानकारी स्क्रीन पर दिखाई देगी। इससे संबंधित व्यक्ति की पहचान करना और उसके स्थान के अनुसार निकटतम सहायता इकाई को भेजना आसान हो जाएगा। प्रशासन के अनुसार, एक ही नंबर और एकीकृत नियंत्रण कक्ष शुरू होने से राज्य में आपातकालीन सेवाओं की गुणवत्ता में और सुधार होगा।

छोटे-छोटे बच्चों को साथ लेकर मंत्री अरुप राय के नेतृत्व में स्वामी विवेकानंद के 164 वे जन्मदिवस अवसर पर विवेक साहित्य पदयात्रा निकाली गई

कुल्टी में अवैध कोयला खनन बना काल

ओपन कास्ट खदान में धंसान मौत, माफिया और सिस्टम पर सवाल

आसनसोल : पश्चिम बर्धमान जिले के आसनसोल के कुल्टी थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़ोरा इलाके में बीसीसीएल की ओपन कास्ट कोयला खदान में मंगलवार को बड़ा हादसा हो गया। आरोप है कि अवैध रूप से कोयला निकालने के दौरान खदान के भीतर बनी सुरंग अचानक धंस गई, जिसमें कई मजदूर दब गए। सूत्रों के मुताबिक हादसे के वक्त कम से कम 5 से 6 लोग खदान के अंदर मौजूद थे। अब तक चार लोगों को बाहर निकाला गया, जिनमें दो की मौत हो चुकी है, जबकि दो गंभीर हालत में आसनसोल जिला अस्पताल में भर्ती हैं। प्रशासन को आशंका है कि अब भी एक से दो लोग मलबे में फंसे हो सकते हैं। उन्हें निकालने के लिए पोकलेन मशीनों से युद्धस्तर पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। हादसे की खबर फैलते ही खदान के आसपास सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई। मृतकों और लापता लोगों के परिजन घटनास्थल पर मौजूद हैं। परिजनों का आरोप है कि कोयला माफिया से जुड़े लोग उन्हें इलाके से हटाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन परिजन अपनों की एक झलक पाने की उम्मीद में डटे हुए हैं। यह कोई पहली घटना नहीं है। बड़ोरा की इस ओपन कास्ट खदान में पहले भी कई बार धंसान से मौतें हो चुकी हैं, इसके बावजूद अवैध खनन जारी रहने का आरोप है। स्थानीय लोगों का दावा है कि रोज़ाना 3 से 4 ट्रक अवैध कोयला यहां से निकालकर आसपास की भट्ठियों में भेजा जाता है। इस हादसे के बाद एक बार फिर खदानों की सुरक्षा, प्रशासनिक निगरानी और कोयला माफिया के नेटवर्क पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। घटनास्थल पर भारी पुलिस बल और वज्रवाहकी तैनाती की गई है। पुलिस का कहना है कि हादसे के कारणों और अवैध खनन के एंगल से मामले की जांच की जा रही है। इस बीच बीजेपी विधायक अजय पोद्दार ने घटना को लेकर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि सुबह पौने आठ बजे एरिया-12, बीसीसीएल बॉर्डर पर भू-धंसान हुआ। ग्रामीण रेट-होल माइनिंग के जरिए कोयला निकाल रहे थे और फंस गए। पहले तीन लोगों को निकाला गया, जिनमें एक की मौत हुई। बाद में मशीन लगाकर दो और शव निकाले गए। कुल पांच लोग थे जिसमें तीन की मौत, दो अस्पताल में हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मासूम ग्रामीण मारे जा रहे हैं और फायदा सिंडिकेट, माफिया और सिस्टम को हो रहा है। पुलिस, माफिया और केंद्रीय बल सब मिले हुए हैं। वहीं, टीएमसी के पूर्व कुल्टी ब्लॉक यूथ अध्यक्ष शुभाशीष मुखर्जी ने कहा कि यह एक परित्यक्त बीसीसीएल खदान है, जो मुख्य सड़क से काफी नीचे है, जहां मशीनरी पहुंचाना मुश्किल है। उनके मुताबिक, अवैध खनन रोकने के लिए बैरिकेडिंग और तारबंदी की गई थी, फिर भी कुछ लोग बेहद जोखिम भरे तरीके से 300-400 फीट नीचे उतर गए। रेस्क्यू ऑपरेशन अभी जारी है। पूर्व बाई काउंसलर अशोक कुमार पासवान ने बताया कि शुरू आत में दो लोगों को होश में बाहर निकाला गया और जिला अस्पताल भेजा गया। फिलहाल यह पुष्टि की जा रही है कि अंदर कोई और फंसा तो नहीं। फिलहाल, रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है, लेकिन यह हादसा एक बार फिर यह सवाल छोड़ गया है- जब खदान कानूनी है, CISF तैनात है, फिर भी अवैध खनन और मौतें क्यों नहीं रुक रही हैं?

अब भवदीय की जगह लिखेंगे वंदे मातरम, बंगाल के राज्यपाल ने लिया फैसला

कोलकाता : बंगाल के राज्यपाल डॉ. सीवी आनंद बोस ने कहा कि अब से वह अपने आधिकारिक पत्राचार में परंपरागत रूप से प्रयुक्त होने वाले भवदीय के स्थान पर वंदे मातरम लिखेंगे। लोक भवन के आधिकारिक एक्स हैंडल के माध्यम से इस निर्णय को साझा करते हुए एक अधिकारी ने कहा कि राज्यपाल का यह कदम बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वंदे मातरम की चिरस्थायी विरासत और सांस्कृतिक महत्व से प्रेरित है। अधिकारी ने कहा कि राज्यपाल ने अपने पत्रों के अंत में भवदीय के स्थान पर वंदे मातरम लिखने का निर्णय लिया है। सभी से आग्रह किया कि वे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की इस प्रतिष्ठित रचना के प्रति श्रद्धा के प्रतीक के रूप में वंदे मातरम को अपने जीवन और दैनिक गतिविधियों में यथासंभव शामिल और आत्मसात करें। राज्यपाल बोस के अनुसार, ऐसे प्रयास राष्ट्रगीत वंदे मातरम से जुड़ी एकता, देशभक्ति और सांस्कृतिक गौरव के मूल्यों को बरकरार रखने में सहायक होंगे। मालूम हो कि देश इस समय वंदे मातरम की रचना के 150 साल पूरे होने का जश्न मना रहा है।

बिहार में नई सरकार बनते ही छीना गया राबड़ी देवी का 20 साल पुराना आवास

पटना : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हाल ही में अपनी नई कैबिनेट के सभी 26 मंत्रियों को सरकारी बंगलों का आवंटन कर दिया है। इस प्रक्रिया में 13 मौजूदा मंत्रियों को उनके पुराने बंगले प्रदान किए गए हैं, जबकि 13 नए मंत्रियों को नए बंगले मिले हैं। इस बदलाव का मुख्य प्रभाव लालू परिवार पर पड़ा है, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी का आवास भी शामिल है।

राबड़ी देवी, जो पिछले बीस वर्षों से पटना के दस सर्कुलर रोड पर निवास कर रही थीं, को नया आवास आवंटित किया गया है। इसके साथ ही लालू यादव के बेटे, तेजप्रताप यादव, के आवास को भी खाली करने का आदेश दिया गया है। तेजप्रताप का 26 एम स्टैंड रोड स्थित बंगला अब भाजपा के मंत्री लखेंद्र पासवान को आवंटित किया गया है। भवन निर्माण विभाग ने इस संबंध में आधिकारिक आदेश जारी किया है। राज्य सरकार ने विधान परिषद के नेता प्रतिपक्ष के लिए हार्डिंग रोड के 39 नंबर के बंगले को आवंटित किया है। भविष्य में अगला नेता प्रतिपक्ष भी इसी बंगले में निवास करेगा, जिसका अर्थ है कि राबड़ी देवी को इसी नए बंगले में रहना होगा। 10, सर्कुलर रोड का बंगला सिर्फ राबड़ी देवी का निवास नहीं है, बल्कि वहीं लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव भी रहते हैं। हालांकि, तेजस्वी यादव को विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष के तौर पर 1, पोलो रोड का बंगला मिला है, लेकिन वहां उनका कार्यालय चल रहा है। 2005 में सत्ता से हटने के बाद, राबड़ी देवी और उनका परिवार 10, सर्कुलर रोड पर रहने लगे थे। वहीं उनके परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार कई परिवर्तन किए गए थे, जैसे नए कमरे बनाना और अन्य सुविधाएँ देना। लेकिन अब उन्हें इस बंगले को खाली करना होगा। यह माना जा रहा है कि भाजपा ने लालू परिवार का बंगला खाली कराने का कठोर निर्णय लिया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा पूर्व मुख्यमंत्रियों के लिए सरकारी बंगले आवंटित करने पर रोक लगाकर, राबड़ी देवी के बंगले पर विवाद पैदा कर दिया था, परंतु नीतीश कुमार ने उस समय इसे बचाने का प्रयास किया।

भारत के 5 सबसे पुराने डाकघर जिन्होंने हमारे संचार के तरीके को आकार दिया

नई दिल्ली : पुराने ज़माने में चिट्ठियाँ भेजना और जवाब का इंतज़ार करना आज भले ही उबाउ लगे, लेकिन संचार के किसी भी उपकरण के आविष्कार से पहले, चिट्ठियाँ ही इंसानों के बीच संवाद का एकमात्र साधन थीं। चिट्ठियाँ भेजना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता था, अक्सर उन्हें मंज़िल तक पहुँचने में कई दिन लग जाते थे। पहले डाकघर की स्थापना ब्रिटिश राज के दौरान हुई थी। 1727 में, भारत को बंबई में अपना पहला डाकघर मिला, जिससे लोगों को चिट्ठियाँ भेजना बहुत आसान हो गया। भारत में डाक प्रणाली का इतिहास ब्रिटिश औपनिवेशिक उपस्थिति से गहराई से जुड़ा हुआ है। अंग्रेजों के आगमन से पहले, भारत स्थानीय संदेशवाहकों, धावकों और यहां तक कि डाक के माध्यम से डाक भेजने पर बहुत अधिक निर्भर था, जो विभिन्न साम्राज्यों के दौरान लोकप्रिय थे। हालांकि, संचार के ये अधिकांश साधन आम लोगों के लिए वहनीय नहीं थे, क्योंकि वे काफी महंगे थे। आरंभिक दिनों में, पत्रों का आदान-प्रदान मुख्य रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके अधिकारियों के बीच होता था।

ब्रिटिश शासन की पहली राजधानी से लेकर भारत के पहले डाकघर की स्थापना तक, कलकत्ता का एक अविस्मरणीय इतिहास है जो आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। डाकियों द्वारा हाथ से लिखे पत्रों के युग से लेकर आज के चहल-पहल भरे डाकघरों तक, भारत का डाक इतिहास संचार के विकास को दर्शाता है।ब्रिटिश शासन की पहली राजधानी से लेकर भारत के पहले डाकघर की स्थापना तक, कलकत्ता का एक अविस्मरणीय इतिहास है जो आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। डाकियों द्वारा हाथ से लिखे पत्रों के युग से लेकर आज के चहल-पहल भरे डाकघरों तक, भारत का डाक इतिहास संचार के विकास को दर्शाता है। शुरुआती दिनों में, पत्रों का आदान-प्रदान मुख्य रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके अधिकारियों के बीच डाकघरों के माध्यम से होता था।

1. कलकत्ता जनरल डाकघर

हालांकि डाकघर की स्थापना बंबई में 1727 में हुई थी, लेकिन भारत को अपना पहला जनरल पोस्ट ऑफिस 1774 में मिला, जो कोलकाता में फोर्ट विलियम के स्थान पर स्थित था। जनरल पोस्ट ऑफिस का डिज़ाइन 1864 में वाल्टर बी. ग्रेनविले द्वारा तैयार किया गया था, जिन्होंने आधिकारिक भवन के निर्माण का कार्य भी किया था। वाल्टर बी. ग्रेनविले ने 1863 से 1868 तक भारत सरकार के सलाहकार वास्तुकार के रूप में कार्य किया।

2. मद्रास जनरल पोस्ट ऑफिस

दूसरा जनरल पोस्ट ऑफिस 1786 में मद्रास में स्थापित किया गया था, जो चेन्नई के पैरी क ्नर स्थित राजाजी सलाई पर स्थित था। इमारत

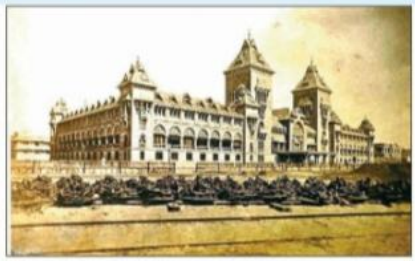

का निर्माण 1884 में पूरा हुआ; इससे पहले, डाक प्रणाली के प्रबंधन के लिए ब्रिटिश राज के कार्यालयों का उपयोग किया जाता था।

3. बॉम्बे जनरल पोस्ट ऑफिस

1794 में, बंबई को अपना पहला जनरल पोस्ट ऑफिस मिला, जो कर्नाटक के बीजापुर स्थित गोल गुंबज की तर्ज पर बनाया गया था। इस कार्यालय का डिज़ाइन ब्रिटिश वास्तुकार जॉन बेग ने तैयार किया था, जो ब्रिटिश सरकार के सलाहकार वास्तुकार थे। वर्तमान इमारत

5. पुणे सामान्य डाकघर

पुणे डाकघर की स्थापना 1854 में हुई थी और यह महाराष्ट्र के सबसे पुराने डाकघरों में से एक है। यह पश्चिमी भारत के डाक नेटवर्क

का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। पुणे डाकघर की इमारत का निर्माण 1873 और 1874 के बीच कर्नल फिंच, आरई द्वारा करवाया गया था। परिसर में एक चमकीले लाल रंग का लेटरब ?क्स है जिसके उपर महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के मुकुट का डिज़ाइन बना हुआ है।

4. बैंगलोर जनरल पोस्ट ऑफिस

बैंगलोर जनरल डाकघर की स्थापना लगभग 1800 में हुई थी, जिससे यह दक्षिण भारत का दूसरा डाकघर बन गया। अपर्याप्त पतों के कारण अस्वीकृत और लौटाए गए पत्रों के सबसे शुरु आती प्रमाण 17 अप्रैल, 1816 को कलकत्ता के पोस्टमास्टर जनरल द्वारा जारी एक डाक सूचना में मिलते हैं। का डिज़ाइन 1902 में तैयार हुआ और इसका निर्माण कार्य 1 सितंबर, 1904 को शुरू हुआ।

एसआईआर का विरोध कितना जायज़?

कोलकाता : एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) का मूल उद्देश्य मतदाता सूची में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 326 के अनुसार वही व्यक्ति मतदाता हो सकता है जो भारत का नागरिक हो, वयस्क हो तथा विधिवत पंजीकृत हो। जो नागरिक नहीं है, वह मतदाता कैसे हो सकता है, यह एक बुनियादी संवैधानिक प्रश्न है।

चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया, एकता और अखंडता के लिए अत्यंत आवश्यक कदम है। इसके बावजूद कुछ राजनीतिक दल तथ्यों को समझे बिना एसआईआर का विरोध कर रहे हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रहित के विरु द्ध प्रतीत होता है। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार है, लेकिन वह जिम्मेदारीपूर्ण और रचनात्मक होना चाहिए। बिहार विधानसभा चुनाव से विपक्षी दलों द्वारा पहले भी एसआईआर का विरोध किया गया था, जिस पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कुछ शर्तों के साथ इस प्रक्रिया को जारी रखने की अनुमति दी थी। मतदाता सूची से उन नामों को हटाना आवश्यक है जो अब जीवित नहीं हैं, स्थानांतरित हो चुके हैं या अवैध रूप से सूची में शामिल कर लिए गए हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था की पवित्रता बनाए रखने के लिए यह प्रक्रिया अनिवार्य है।

इसके बावजूद कांग्रेस, टीएमसी, राजद और डीएमके जैसी पार्टियाँ लगातार एसआईआर का विरोध कर रही हैं, जो कई सवाल खड़े करता है। इसी क्रम में बिहार से लोकतंत्र को शर्मसार करने वाली एक गंभीर घटना सामने आई है। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में ढाका विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक एवं भाजपा प्रत्याशी पवन जायसवाल ने सुनियोजित और योजनाबद्ध तरीके से फर्जी मतदान का आरोप लगाया है। उनके अनुसार, मतदान में 298 ऐसे मतदाता शामिल थे जो विदेश में रह रहे थे, 45 मृत थे, 41 के नाम दोहराए गए थे, 1057 मतदाता राज्य से बाहर थे तथा 3 मतदाता जेल में बंद थे। इस विधानसभा क्षेत्र से राजद प्रत्याशी फैजल रहमान मात्र 178 मतों के अंतर से विजयी हुए। यह मामला वर्तमान में न्यायालय में विचाराधीन है और इसकी पहली सुनवाई हो चुकी है।

अब यह गंभीर प्रश्न उठता है कि एसआईआर के अंतर्गत बिहार में लगभग 47 लाख नाम हटाए जाने के बाद भी क्या फर्जी मतदाता सूची में शेष रह गए? वहीं ढाका विधानसभा में एसआईआर के तहत लगभग सत्रह हजार नाम हटने के बावजूद क्या फर्जी मतदाताओं ने मतदान किया? ऐसे में यह सवाल विपक्षी दलों से भी है कि एसआईआर का विरोध क्या वास्तव में उचित है?

यह भी चिंताजनक है कि कुछ राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या परोक्ष रू प से विदेशी प्रभाव, विदेशी मूल या विदेशी वोट बैंक की राजनीति पर निर्भर होते जा रहे हैं, जिससे देश की लोकतांत्रिक जड़ें कमजोर हो रही हैं। देश के मतदाताओं को यह स्पष्ट रूप से तय करना होगा कि भारत चलेगा भारतीयों के हित में या किसी बाहरी प्रभाव के अधीन।

भारतीय कानून के अंतर्गत फर्जी मतदान केवल चुनावी गड़बड़ी नहीं, बल्कि एक गंभीर चुनावी अपराध है। यह जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 62(1) का उल्लंघन है तथा धारा 135 के तहत दंडनीय अपराध है, जिसमें एक वर्ष तक की सजा और जुर्माने का प्रावधान है। आवश्यकता है कि इन प्रावधानों को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

लोकतंत्र की आत्मा जनता का मत है। मताधिकार में इस प्रकार की सुनियोजित हेराफेरी सीधे तौर पर संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों पर हमला है। यदि निष्पक्ष जांच में इन आरोपों की पुष्टि होती है, तो यह चुनावी व्यवस्था, प्रशासनिक निगरानी और पारदर्शिता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े करता है।

अतः इस पूरे मामले की उच्चस्तरीय, निष्पक्ष और समयबद्ध जांच कराई जानी चाहिए तथा दोषियों के विरु द्ध कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि भविष्य में जनता के मताधिकार के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ दोबारा न हो।

इं. आर. के. जायसवाल
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी,
मानवाधिकार एक्शन फोरम

दिशा पटानी और तलविंदर की डेटिंग अफवाहें तेज़

मुंबई: बॉलीवुड अभिनेत्री दिशा पटानी और पंजाबी गायक तलविंदर इन दिनों बॉलीवुड की दुनिया में चर्चा का विषय बने हुए हैं। दोनों के बीच डेटिंग की अफवाहें तब शुरू हुईं, जब उन्हें नुपुर सैनन और स्टेबिन बेन की शादी के बाद एयरपोर्ट पर एक साथ देखा गया। इसके बाद से सोशल मीडिया पर फैंस और ग?सिप पेज लगातार यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या वे सच में डेट कर रहे हैं। इन अफवाहों के बीच 13 जनवरी को नुपुर सैनन और स्टेबिन बेन के मुंबई रिसेप्शन में दोनों की उपस्थिति ने फिर से ध्यान खींचा। हालांकि, इस अवसर पर दोनों ने मीडिया से दूरी बनाए रखी। दिशा पटानी इवेंट में अपनी करीबी दोस्त और अभिनेत्री मौनी रॉय के साथ पहुंचीं, और दोनों ने पैपराजी के लिए पोज दिए। कुछ समय बाद, तलविंदर अकेले रिसेप्शन में पहुंचे। मौनी रॉय ने गेट पर उनका स्वागत किया और उन्हें अंदर ले गईं। इस दौरान तलविंदर ने दिशा के साथ खड़े होने या पोज देने से परहेज किया। जब रिसेप्शन से बाहर निकले, तब तलविंदर एक बार फिर मौनी रॉय के साथ देखे गए। इस दौरान वे स्पष्टता से असहज दिख रहे थे, शायद इसलिए कि आमतौर पर वे अपने चेहरे को मास्क या स्कल फेस पेंट से छिपाते हैं, लेकिन इस इवेंट में उनकी तस्वीरें बिना किसी कवर के ली जा रही थीं। पैपराजी की हलचल से परेशान होकर उन्होंने जल्दबाजी में वेन्यू छोड़ा और किसी सवाल का उत्तर नहीं दिया। तलविंदर के जाने के कुछ मिनट बाद, दिशा पटानी को वेन्यू से बाहर निकलते देखा गया। इस बार वह अपने करीबी दोस्त अलेक्जेंडर एलेक्स इलिक के साथ थीं।

सिर्फ आस्था नहीं, विज्ञान भी मानता है 'गाय' को पहली रोटी खिलाने के हैं ढेरों फायदे

नई दिल्ली : भारत के लाखों घरों में हर सुबह पहली रोटी गाय के लिए निकालने की परंपरा सदियों पुरानी है। यह केवल एक धार्मिक रस्म नहीं है, बल्कि जीवन और शुद्धता की प्रतीक 'गौमाता' के प्रति आभार व्यक्त करने का एक तरीका भी है। हालांकि, आज के वैज्ञानिक दौर में, कई लोगों के मन में यह सवाल उठता है- क्या यह परंपरा वास्तव में गाय के लिए सुरक्षित है?

एक अध्ययन के अनुसार, जब गायों को सड़क का कचरा खाने के बजाय घर की बनी ताजी चपाती या चारा दिया जाता है, तो उनकी सेहत में जादुई सुधार होता है। विज्ञान मानता है कि साफ-सुथरा भोजन गायों की आंतों की सेहत, दूध की गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यानी, यह प्राचीन रिवाज न केवल हमारी संस्कृति को जीवित रखता है, बल्कि वैज्ञानिक रूप से भी जानवरों की भलाई करता है।

पहली रोटी देने की प्राचीन परंपरा- गाय को पहली रोटी खिलाने की प्रथा को 'गौ सेवा' कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में गाय को एक दैवीय रूप माना गया है जो पोषण और पवित्रता का प्रतीक है।

धर्म और कर्म– अथर्ववेद और भागवत पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में गाय को खिलाना धर्म और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान का कार्य बताया गया है।

भारत में गाय को पहली रोटी खिलाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जो न केवल धार्मिक है बल्कि वैज्ञानिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।

पुराना संबंध-- ऐतिहासिक रूप से परिवार दूध, गोबर और खेती में मदद के लिए गायों पर निर्भर थे, इसलिए यह कार्य आध्यात्मिक होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी था। आज भी यह परंपरा करुणा और प्रकृति के साथ जुड़ाव को दर्शाती है। आधुनिक समय में इस परंपरा का महत्व- आज के समय में इस रस्म के मायने थोड़े बदल गए हैं। शहरों में लोग इसे केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि दया और सहानुभूति के रूप में देखते हैं।

कुपोषण से बचाव– पशु कल्याण समूहों का मानना है कि साफ और पौष्टिक भोजन खिलाने से शहरी गायों में भूख और कुपोषण कम होता है।

पैसे नहीं, भोजन दें– कई गौशालाएं और संस्थाएं अब लोगों को नकद दान देने के बजाय ताजी रोटियां या चारा देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इससे गायों को सही पोषण मिलता है और सेवा का असली भाव भी बना रहता है।

क्या है वैज्ञानिक फायदे?

विज्ञान के नजरिए से देखें तो गायें 'जुगाली करने वाले' जीव हैं, जिन्हें स्वस्थ पाचन के लिए रेशेदार भोजन की जरूरत होती है।

सही भोजन– सादी गेहूं की रोटियां और हरा चारा उनके पेट की गतिविधियों के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

गलत भोजन से बचें– नमक, तेल या प्लास्टिक की थैलियों वाला भोजन उन्हें नुकसान पहुंचा सकता है।

सेहत में सुधार: स्टडी बताती हैं कि जब गायों को घर का बना सादा और साफ खाना मिलता है, तो उनकी पाचन शक्ति बढ़ती है और बीमारियां कम होती हैं।

पर्यावरण के लिए भी है फायदेमंद– गाय को जिम्मेदारी से रोटी खिलाना हमारे पर्यावरण को भी स्वच्छ रखने में मदद करता है-कचरे से दूरी: जब गायों को भरपेट खाना मिलता है, तो वे कचरे के ढेर में मुंह नहीं मारतीं और प्लास्टिक जैसी जानलेवा चीजें खाने से बच जाती हैं। गंदगी में कमी: इससे शहरों में कूड़ा फैलने की समस्या कम होती है और गायों में पेट की गंभीर बीमारियां नहीं होतीं। उपयोगी गोबर: शोधकर्ताओं के अनुसार, स्वस्थ गाय का गोबर एक बेहतरीन जैविक खाद और स्वच्छ ईंधन का काम करता है, जो खेती के लिए वरदान है।

अगर आप भी गाय को पहली रोटी देना चाहते हैं, तो इसे सुरक्षित बनाए रखने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है- - कैसी हो रोटी: गाय को हमेशा बिना नमक, तेल या घी की सादी रोटी दें। सड़क के किनारे खाना खिलाने से बचें ताकि दुर्घटना न हो। कोशिश करें कि गाय साफ जगह पर खड़ी हो। गौशालाओं का सहयोग- शहरों में स्थानीय गौशालाओं के साथ मिलकर रोटियां दान करें। कई जगहों पर रोटी ड्राइव भी चलाई जाती है, जहां आप ताजी चपाती दे सकते हैं। सावधानी से दी गई एक सादी रोटी न केवल गाय का पेट भरती है, बल्कि हमारी आत्मा को भी सुकून देती है। यह इंसानों और प्रकृति के बीच के रिश्ते को मजबूत बनाती है।

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिबपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**बैद्यनाथ झा**, फोन- 9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Baidyanath Jha** Mo. 9798848926, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)